Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

भारतीय ज्ञान परम्परा और शोध

1. विदुषी आमेटा
सह आचार्य, हिन्दी-विभाग,
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) सरदारशहर
ईमेल: **vidusheeameta@gmail.com**
2. दयानिधि पाठक
सहायक आचार्य, हिन्दी-विभाग
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) सरदारशहर

शोध सार

प्राचीन काल से भारत उच्च मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट ज्ञान व परम्पराओं का देश है। यह आध्यात्म और ज्ञान की भूमि है। पाश्चात्य सभ्यता के भौतिकवाद के विपरीत भारतीय सभ्यता भावना और अपनत्व पर आधारित है। आज पश्चिमी सभ्यता भारतीय ज्ञान विज्ञान का अनुसरण कर भारतीय शास्त्रों-वेद, पुराण, उपनिषद आदि का अनुसंधान करने लगी है। भारत की परम्पराओं व ज्ञान को विश्व अपना रहा है। हमें अपनी परम्पराओं व संस्कृति को अनुसन्धान की नई दृष्टि से देखने व समझने की आवश्यता है। भारत में खगोल, भूगोल, रसायन, आयुर्वेद, स्थापत्य, वास्तु, ज्योतिष आदि समस्त क्षेत्रों में मानव जाति के हित में अनुसन्धान की आवश्यकता है। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित उपयोगी तत्त्वों की खोज करने के सूत्र देते हुए अनुसन्धान की आवश्यकता प्रतिपादित करता है।

प्रस्तावना

भारत एशिया महाद्वीप एवं सम्पूर्ण विश्व का एक विशाल भू-भाग युक्त प्रदेश है, जो संस्कृति एवं ज्ञान की दृष्टि से विश्व की प्राचीनतम सभ्यता मानी जाती है। लिखित व मौखिक दोनों ही स्वरूपों में यह ज्ञान का आदि स्रोत है। ऋग्वेद विश्व का प्रथम ग्रंथ स्वीकार किया गया है। भारत की ज्ञान परम्परा वेद ग्रंथों के रचनाकाल से स्वीकृत हुई है परन्तु, यह मात्र प्रमाणित, लिखित व दृश्य ज्ञान है। यथार्थ में, भारतीय ज्ञान परम्परा का आरंभ मौखिक व श्रव्य स्वरूप में इससे कई वर्षों पूर्व अनुमानित किया जा सकता है। सामान्य रूप में परम्परा का शाब्दिक अर्थ है- 'बिना व्यवधान के शृंखला रूप में जारी रहना।' अर्थात ज्ञान की वह प्रणाली जिसमें, किसी विषय या उपविषय का ज्ञान बिना किसी परिवर्तन के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संचारित होता रहता है।

भारत के संदर्भ में कहा जाता है- ''प्राचीन भारतीय समृद्धि और समरसता के मूल में प्राकृतिक संपदा, कृषि और गोवंश थे। प्राकृतिक संपदा के रूप में हमारे पास नदियों के अक्षय भण्डार के रूप में शुद्ध और पवित्र जल स्रोत थे। हिमालय और उष्ण कटिबंधीय वनों में प्राणी और वनस्पति की जैव विविधता वाली जलवायु थी। मसलन मामूली सी कोशिश आजीविका के लायक पौष्टिक खाद्य सामग्री उपलब्ध करा देती थी। इसीलिए नदियों

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

के किनारे और वनप्रांतरों में मानव सभ्यता और भारतीय संस्कृति विकसित हुई। आहार की उपलब्धता सुलभ हुई तो सृजन ओर चिंतन के पुरोधा सृष्टि के रहस्यों की तलाश में जुट गए। आर्थिक संसाधनों को समृद्ध बनाने के लिए ऋषि मुनियों ने नए-नए प्रयोग किए"।[1] ऋषि मुनियों ने जब जीवन व जगत को लेकर नए प्रयोग किए, नए अनुभव प्राप्त किए, उन्हें शास्त्रार्थ की तार्किकता के माध्यम से सत्य-असत्य और उपयोग-अनुपयोग की कसौटियों पर कसकर मानव हित में रचनात्मक अभिव्यक्ति दी है। शास्त्रार्थ भी भारतीय ज्ञान के तार्किक, तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक व श्रेष्ठ शोधपरक दृष्टि का परिचायक है।

ऋषि और मुनि मंत्रदृष्टा मात्र नहीं रहे हैं वरन् उन्होंने विद्योपदेश के माध्यम से जन सामान्य तक ज्ञान को प्रेषित करने में अहम् भूमिका निभाई है। ''ज्ञान, सदाचार, कलाएँ जो कुछ साहित्य के विविध रूपों में विद्यमान है, उनके लिए हम प्राचीन विद्वानों और ऋषि-मुनियों के प्रति कृतज्ञ है। उन्हीं की कृपा से आज हमको श्रुति, स्मृति, वेदाँग, चौसठ महाविद्या और कलाओं के मूल तथ्यों का ज्ञान हो सकता है अथवा कम से कम उनके अस्तित्व का पता लग सकता है। यह समस्त साहित्य देववाणी अथवा संस्कृत में प्रकट किया गया है परन्तु, ज्ञान की परम्परा में किसी विशेष भाषा या उसके विशेष रूप का बंधन नहीं है। भगवान बुद्ध और जैन आचार्यों ने पाली, मागधी आदि प्राकृत भाषाओं का आश्रय लिया और उनकी परम्परा भी आज तक चली आ रही है। हिन्दी, बँगला, मराठी, गुजराती, उडिया, तैलंगी, तेलुगु, कन्नड, मलयालम, पंजाबी, आसमी आदि आजकल की प्रचलित प्राकृत भाषाएँ हैं, जिनमें संत, महात्मा, सुधारकों ने सदाचार की शिक्षाएँ देकर अपनी परम्परा को स्थिर रखा है। इन सबकी परम्परागत शिक्षाएँ अधिकांश में लेखबद्ध हैं"।[2]

भारतीय ज्ञान परम्परा में प्रकृति, प्राकृतिक संसाधन व मानव जीवन को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। इनके संरक्षण विकास और प्रयोग के द्वारा जीवन को सरल व सहज बनाने का प्रयास भारतीय ज्ञानियों ने किया। ''दूरदृष्ट्रा मनषियों ने हजारों साल पहले ही लंबी ज्ञानसाधना व अनुभवजन्य ज्ञान से जान लिया था कि प्राकृतिक संसाधनों का कोई विकल्प नहीं है। वैज्ञानिक तकनीक से हम इनका रूपान्तरण अथवा कायान्तरण तो कर सकते हैं, किन्तु तकनीक आधारित किसी भी आधुनिकतम ज्ञान के बूते इन्हें पुनर्जीवित नहीं कर सकते"।[3] प्राकृतिक संपदा का ऐसा महत्त्व सम्पूर्ण विश्व साहित्य में भारत के अतिरिक्त किसी अन्य साहित्य में दिखाई नहीं देता है।

भारत में ज्ञान व्यावहारिक अनुभवों की उपज है। हजारों-सैंकड़ों वर्षो के अनुभवों से निकाले गए निष्कर्ष शास्त्रों के रूप में परिणत होते हैं। ''जो परिणाम अनेक घटनाओं से निकलता है और अनुभव सिद्ध हो जाता है, वही नीति अथवा आचार शास्त्र का नियम बन जाता है। सब घटनाओं को बारम्बार दोहराने के बदले एक भारी महत्त्व की घटना को देकर एक सूत्र या नियम निर्धारित कर देना पर्याप्त नहीं है। भारतीय श्रुतियों व स्मृतियों में ऐसे असंख्य सूत्र हैं। पुराणों, इतिहासों आदि में वही सूत्र कथा के साथ समझाये गये हैं। उनमें उदाहरणों की कमी नहीं होती, सर्ग, प्रति सर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरितों द्वारा प्राचीन परम्परा का संकलन किया गया है। यह किसी देश या किसी राज्य का इतिहास नहीं है। यह सारी सृष्टि का इतिहास है और इतने लम्बे जमाने का निचोड़ है, जिसमें असंख्य राष्ट्रों का जन्म, यौवन, प्रौढ़ता, बुढ़ापा और नाश होता रहा है"।[4]

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

व्यावहारिकता से सैद्धान्तिकता का यह क्रम भारतीय ज्ञान परम्परा की महत्त्वपूर्ण सिद्धि है। यह स्थिति अनुसंधान दृष्टि को प्रत्यक्ष करती है। भारतीय अनुसंधान दृष्टि उपयोगितावादी, समाजवादी, मानववादी व उदात्तवादी भावना से युक्त है। जैसा कि कहा जाता है- ''भारत में जब ऋग्वेद की रचना होने लगी तो अलग-अलग यज्ञ के लिए यज्ञवेदी बनने की बात हुई। यह निश्चित किया गया कि किस यज्ञ के लिए किस क्षेत्रफल और आकार-प्रकार की यज्ञवेदी बनाई जाएगी। समाज की इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए गणित का उपयोग किया गया और रेखागणित (ज्यॉमेट्री) उत्पन्न हुई। पाइथोगोरस जिस गणित को दुनिया के सामने लेकर आए, उससे कई सौ साल पहले बौधायन ने शुल्ब सूत्र में इसकी विस्तार से चर्चा कर दी थी। आज भी भारत का हर राज मिस्त्री लंबे धागे के साथ वजन लगाए रखता है और भवन निर्माण में उसका तरह-तरह से बखूबी इस्तेमाल करता है। वह शुल्ब सूत्र की ही उपज है''।[5] यह उद्धरण भारतीय ज्ञान के अनुसंधानपरक दृष्टिकोण व उपयोगितावाद की प्रेरणा को स्पष्ट करता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. दिनेश सिंह बताते हैं कि ''भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परम्परा में केवल बौधायन ही नहीं रहे हैं, बल्कि कात्यायन भी हुए। ऐसे तमाम गणितज्ञ भारत में हुए हैं, जिन्होने सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर गणित की रचना की। कुल सोलह शुल्ब सूत्र लिखे गए। निश्चित रूप से पाइथोगोरस का प्रमेय गणित का ऊँचा सिद्धान्त है, लेकिन भारतीय समाज की आवश्कताओं को ध्यान में रखकर वैदिक काल में जिस गणित की रचना की गई थी, वह आज के, वर्तमान, पश्चिमी परिभाषा से अलग अद्भुत और उन्नत है''।[6] इसी प्रकार कोपरनिकस न्यूटन से पूर्व धरती की गुरुत्वाकर्षण शक्ति की बात कह चुके थे। छठी ई. में वराहमिहिर ने कहा था- 'अन्तरिक्ष में कोई चीज है, जो सब पिण्डों को बांधे रखती है।' यह कथन गुरुत्वाकर्षण के साथ नक्षत्रों की स्थिति, व्यवस्था और गतिक्रम के संदर्भों को व्यक्त करता है। हमारे ज्योतिषी सूर्य-चन्द्र की गति की जानकारी के आधार पर जो तिथिवार पंचाग का निर्माण करते रहे हैं, वहाँ तक नासा के वैज्ञानिक आज तक नहीं पहुँच पाए हैं।

भारतीय प्रामाणिक लिखित ज्ञान परम्परा क्रमशः वेद, उपनिषद, संहिता, दर्शनशास्त्र, से लेकर संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश और वर्तमान हिन्दी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य तक चली आ रही है। इनकी रचना जीवनोपयोगी शोध का परिणाम है। शोध के लिए जिज्ञासा प्रथम आवश्यक शर्त है। वेदों में ब्रह्माण्ड के प्रति यह जिज्ञासामूलक भाव सर्वत्र दृष्टिगोचर है। उपनिषद वेदग्रंथों के सूक्तों की व्याख्या के रूप में निर्मीत हुए हैं। चार वेद ग्रंथों के व्याख्यात्मक, विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध का परिणाम अठारह उपनिषद, श्रुतियाँ और स्मृतियाँ हैं। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य प्रकृति के रहस्यों को अनावृत्त करने के प्रयास में सृजित है। इसी प्रकार दर्शन शास्त्र में सृष्टि निर्माता ईश्वर की स्थिति और सृष्टि रचना के सूत्रों को तार्किकता के साथ स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। वैदिक साहित्य के शब्दों की व्याख्या व उत्पत्ति की चर्चा करने वाले ग्रंथ 'निघण्टु' भारतीय ज्ञान की अन्वेषणात्मक प्रतिभा के नमूने हैं। इसके रचनाकारों ने वेद के एक-एक शब्द को प्रकृति, प्रत्यय, मूल धातु, संबंधित कर्म, प्रयोग, प्रकार आदि की उत्पत्ति, अर्थ, भाव, व्युत्पत्ति के संदर्भ में विश्लेषित किया है। यह भाषा विज्ञान की तुलनात्मक, विवरणात्मक, संरचनात्मक विधियों का प्रारंभिक प्रयोग है।

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

वैदिक संस्कृत के बाद लौकिक संस्कृत की धारा प्रवाहित होती है। भारतीय भाषा को सुदृढ़ व स्थिर करने के दृष्टिकोण से पाणिनी के ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' का सृजन हुआ। यह ग्रंथ संस्कृत अथवा किसी भी भाषा के ग्रंथ को व्याकरण निबद्ध करने का प्रथम उत्कृष्ट प्रयास है। ईसा पूर्व तीसरी शती में आचार्य भरत मुनि ने 'नाट्यशास्त्र' शीर्षक ग्रंथ की रचना की। यद्यपि यह ग्रंथ नाट्य कला के संदर्भ में सैद्धान्तिक विवेचन का ग्रंथ है परन्तु, इसमें नाटक व साहित्य के साथ अन्य कलाओं को सैद्धान्तिक आधार प्राप्त होता है। इस ग्रंथ में नाटक के प्रदर्शन के लिए बनाए जाने वाले रंगमंच के प्रकारों एवं उनके आकारगत विवेचन को पढ़कर वर्तमान नगरीय अभियांत्रिकी; सिविल इंजीनियरिंग की पुस्तकें और सूत्र फीके नजर आते हैं। रंगमंच का इंच-इंच आकार और दर्शक मण्डप, पार्श्व भाग आदि की लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई एवं आकार का विस्तृत विवेचन इसमें उपलब्ध है। इसी प्रकार 'रस सूत्र' के माध्यम से रस निष्पत्ति की प्रक्रिया तथा रसावयवों का विवेचन, मनोवैज्ञानिक ग्रंथों की आधारभूमि बनाता है। संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्य आदि विविध विषयों का सैद्धान्तिक ज्ञान व्यावहारिक भूमि पर इस ग्रंथ में स्थापित है।

महर्षि पतंजलि द्वारा प्रवर्तित आयुर्वेद आज विश्वभर में अपनी धूम मचा रहा है। जहाँ समस्त चिकित्सा पद्धतियाँ, रोग नियंत्रण के सूत्रों पर आधारित है, वही आयुर्वेद रोग प्रतिरोध व रोग मुक्ति के सिद्धान्त पर काम करता है। प्राकृतिक संपदा का प्रयोग कर मनुष्य शरीर को स्वस्थ, निरोग रखना तथा प्रत्येक रोग की प्रतिरोधी क्षमता विकसित करना आयुर्वेद की लाभकारी प्रक्रिया है। आयुर्वेद शास्त्र के साथ-साथ भारतीय जनमानस की सहज प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति है, जिसमें मनुष्य अपने पास उपलब्ध प्राकृतिक वस्तुओं का प्रयोग कर किसी भी रोग का प्रतिरोध तंत्र विकसित कर सकता है। इसी के साथ भारतीय योग चिकित्सा भी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हितकारी रही है। यहाँ उल्लेखनीय है कि आयुर्वेद व योग के सिद्धान्त एक दिन में किसी प्रयोगशाला में प्रयोग कर नहीं गढ़े गए हैं, वरन् वे सदियों की परम्परा से बने जीवनानुभवों के सार की सैद्धान्तिक परिणति है।

भारत का कृषि ज्ञान एवं मौसम विज्ञान भी आनुभाविक अनुसंधान दृष्टि से विकसित हुआ है। एक सामान्य किसान चिडिया के अण्डों, घोंसले का निर्माण आदि से वर्ष पर्यन्त की वर्षा का पूर्वानुमान कर लेता है। गाय-बैल की आवाजों और आदतों में उसे तूफान, पानी, आँधी, अकाल, पशु की बिमारी आदि का पूर्वानुमान हो जाता है। सूर्य-चाँद के वलय आने वाले समय की भविष्यवाणियाँ कर देते हैं। ये भविष्यवाणियाँ अवैज्ञानिक नहीं है, वरन् कई वर्षों से चले आ रहे अनुभवों की परम्परा का ठोस आधार लेकर निर्मीत हुई है, जिनकी सत्यता किसी वैज्ञानिक निष्कर्ष की सत्यता के समानान्तर प्रमाणित की जा सकती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा की एक उपलब्धि गौत्र व्यवस्था में भी दृष्टिगत है। वंश परम्परा के अनुसार गौत्र का निर्धारण होता है। अर्थात यह व्यवस्था रक्त संबंधों व आनुवांशिक प्रणाली के आधार पर निर्मीत हुई है। विवाह संबंध स्थापित करने में रस की मुख्य भूमिका रहती है। वर्तमान के वैज्ञानिक जब एक ही आनुवांशिक गुणसूत्रों वाले व्यक्तियों से उत्पन्न संतान के मानसिक-शारीरिक अस्वस्थता की बात कहते हैं, तब भारतीय गौत्र व्यवस्था की वैज्ञानिकता स्थापित होती है, जिसमें सात पीढ़ियों तक सगोत्रीय विवाह वर्जित माना गया है। वर्तमान में मनुष्य के बौद्धिक स्तर में कमी इस व्यवस्था के प्रतिकूल विवाह संबंध स्थापित होने के कारण से हैं। वात्स्यायन द्वारा

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

रचित 'कामसूत्र' स्त्री-पुरुष के शारीरिक-मानसिक संबंधों पर विश्लेषणात्मक दृष्टि से लिखी गई रचना है। वर्तमान में पाश्चात्य देशों में किशोरों व युवाओं को दी जाने वाली अनिवार्य 'सेक्स एज्युकेशन' की तुलना में यह पुस्तक बहुत ही सरस रोचक उदाहरणों के माध्यम से काम विषयक जिज्ञासाओं को शांत करती है। अत्यंत सहजता से किसी अकथनीय विषय पर संवाद इस रचना की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

वर्तमान युग अर्थप्रधान है। समस्त ज्ञान-विज्ञान की बात करते हुए अर्थशास्त्र जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर चर्चा आवश्यक हो जाती है। कौटिल्य अर्थात चाणक्य के द्वारा लिखा गया ग्रंथ 'अर्थशास्त्र'इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण आधार है। इसमें राजनीति तंत्र व अर्थ तंत्र दोनों ही व्यवस्थाओं पर समान दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त निहित हैं, जो किसी भी देश को सुदृढ़ बनाने हेतु उपयोगी हो सकते हैं। भारत को आर्थिक दृष्टिकोण से कृषि प्रधान देश की संज्ञा प्राप्त है। यह स्थिति भारत की अर्थव्यवस्था संबंधी समझ को प्रतिबिम्बित करती है। कृषि संस्कृति वह स्थिति है, जिसमें मानव जीवन यापन हेतु प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहता है। इसके अन्तर्गत, खेती किसानी मात्र नहीं, अपितु इनसे संबंधित अन्य लघु व कुटीर उद्योग भी सम्मिलित हो जाते हैं।

यह व्यवस्था कम लागत पर अधिक लाभ की व्यवस्था है। इसमें हानि की संभावना बहुत कम होती है। कम लागत में अधिक आय इसका प्रत्यक्ष लाभ है, साथ ही कई अप्रत्यक्ष लाभ भी सन्निहित हैं। जैसे- शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य, पर्यावरण सुरक्षा, सामाजिक सहसंबंध, कम जोखिम, संसाधनों का पुनर्नवीनीकरण आदि। इस प्रक्रिया में कई आर्थिक समृद्धि के सूत्र हैं, जो समावेषी विकास सथापित करने में सक्षम हैं। वर्तमान में 'मेक इण्डिया' के लिए जिस 'मेक इन इण्डिया' का नारा दिया जा रहा है, उसका देशज आधार पूर्वोक्त कृषि संस्कृति है।

राजनीति भी किसी देश के विकास और उसकी सुदृढ़ स्थिति के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रामायण, महाभारत, रामचरितमानस जैसी काव्य रचनाएँ जिन्हें हम पौराणिक-धार्मिक रचनाओं के रूप में याद करते हैं, वे राज्य व समाज के लिए नीति निर्माण की आदर्श भूमि का निर्माण करते हैं। जैसे- रामभक्त कवि तुलसीदास ने 'रामराज्य' की परिकल्पना की है, जिस राज्य में प्रजा की स्थिति इस प्रकार होनी चाहिए- ''चारि चरन धर्म जब माहीं, पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं। राम भगति रत नर अरु नारी, सकल परम गति के अधिकारी। अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा, सब सुंदर सब बिरुज सरीरा। नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना, नहीं कोउ अबुध न लच्छन हीना।"[7] अर्थात कोई भी नागरिक दुखी या दरिद्र न रहे। यह स्थिति वर्तमान में किसी विकसित देश में भी असंभव है। शांति, आनंद, न्याय व सौहार्द्र किसी राज्य की स्थिति के अनिवार्य घटक हो, तब जाकर रामराज्य की की कल्पना साकार होगी। नैतिकता के उच्च बंधन, त्याग वृत्ति, मानवता, शांति, उदारता, दया, सार्वभौमिक व सार्वकालिक तथ्य हैं, जिनसे कोई भी राष्ट्र आदर्श सामाजिक-राजनैतिक व्यवस्था का ढाँचा निर्मीत कर सकता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा की समृद्ध विरासत में शोध एक अनिवार्य तत्व के रूप में निहित है। ज्ञान सृजन में, ज्ञान की परम्परा के विकास में और ज्ञान के उपयोग में, सभी सोपानों पर इस अन्वेषण वृत्ति का दिग्दर्शन किया जा सकता है। उपर्युक्त विवरण में शोध व अन्वेषी दृष्टिकोण से सृजित ज्ञान की समृद्धि पर चर्चा की गई है। भारतीय परम्परा में अनुसंधान दृष्टि विस्तृत, सूक्ष्म और गहन है, परन्तु उसके निष्कर्षों की अभिव्यक्ति रचनात्मकता के साथ की गई है। यथा- प्राणी विज्ञान में स्वीकार किया गया है कि मनुष्य के शरीर निर्माण में पानी, हवा आदि का

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

योगदान रहता है। भारतीय संतों ने कई स्थानों पर शरीर रचना के पाँच घटकों का उल्लेख किया है। पंच तत्वों के संतुलन द्वारा शरीर सुचारु गति से चलता है, यह स्थापना चिकित्सा विज्ञान का आधार है। संतों के द्वारा अपनी वाणियों में सहजता के साथ शरीर संरचना, मानसिक संतुलन, समाज संरचना, राज्य व्यवस्था, पर्यावरण, कला एवं ज्ञान-विज्ञान के विविध विषयों पर शोधपरक विवरण संकलित है।

अंत में, अनुसंधान से प्राप्त ज्ञान की परम्परा और उसके उपयोग पर बात करना भी आवश्यक है। भारत में ज्ञान प्राप्ति अर्थात शिक्षार्जन, श्रवण-लेखन के साथ आनुभाविक व प्रयोगात्मक प्रविधि से होता आया है। ज्ञानार्जन के लिए शिक्षार्थी में कुछ गुणों की स्थिति अनिवार्य है। विद्यार्थी कौन होगा, इसके लिए शारीरिक-मानसिक स्तर के साथ नैतिक-सामाजिक स्तर के मानदण्ड भी हैं। यह स्थिति बताती है कि विशिष्ट प्रकार के ज्ञान को योग्य विद्यार्थी ही ग्रहण कर सकता है। जहाँ विद्यार्थी की योग्यता का प्रश्न उठता है, वहाँ परिवेश की संरचना और ज्ञान की उपयोगिता के प्रश्न भी सम्मिलित हो जाते हैं। प्रकारान्तर से यह शोध निष्पत्ति की उपादेयता का प्रश्न है। ''भारत के प्राचीन गं्रथ ज्ञानानुशासन, शांति, सहनशीलता, परोपकार, धर्मपरायणता के साथ-साथ कर्मवादिता का संदेश देते हैं। युद्ध के कुछ क्षण पूर्व भी युद्ध से बचने-बचाने की कोशिश-कवायद कदाचित ही विश्व के किसी देश में दिखाई देगी। इस दृष्टि से भी निश्चय ही हमें अपने ग्रंथों और ज्ञान परम्परा की ओर लौटने की जरुरत है''।[8]

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान की उत्पत्ति, ज्ञानार्जन और ज्ञानोपभोग तीनों ही चरणों में शोध की महती भूमिका दिखाई देती है। भारतीय ज्ञान परम्परा श्रवण-लेखन अर्थात मौखिक व लिखित दोनों रूपों में उपलब्ध है। यह एक समृद्ध विरासत है, जो अनुशासन से मनुष्य को संस्कारित करती है। कर्मवाद इसका मुख्य साधन है। जैसा कि जयशंकर प्रसाद कामायनी में कहते हैं- 'इच्छा, क्रिया, ज्ञान मिल लय थे।' ज्ञान व कर्म का मेल सिद्धि के लिए आवश्यक है। कर्मयोग व ज्ञानयोग दोनों ही समान महत्त्व रखते हैं। इसमें इतिहास, भाषा विज्ञान, भूगोल, नृतत्व शास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र, ज्योतिष, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, गणित आदि विषयों से लेकर समस्त कलाओं के शोधपरक आनुभाविक सिद्धान्त निहित हैं। वर्तमान शोध प्रक्रिया मात्र सिद्धान्त निर्माण तक सीमित है, परन्तु भारतीय ज्ञान परम्परा अनुभव से सिद्धान्त और सिद्धान्त निर्माण से कर्म की पूरी प्रक्रिया में गतिमान होती है। अतः अनुसंधान की चरम सीमा व प्रभावी व्यावहारिकता इसमें सन्निहित है।

संदर्भ

1. प्रमोद भार्गव, आलेख-दुनिया के साथ साझा होगी भारतीय ज्ञान परम्परा, प्रवक्ता.कॉम
2. श्री रामदास गौड़ा, आलेख- भारतीय परम्परा और साहित्य का महत्त्व, अखण्ड़ ज्योति, वर्ष 1958, वर्जन-2
3. प्रमोद भार्गव, आलेख-दुनिया के साथ साझा होगी भारतीय ज्ञान परम्परा, प्रवक्ता.कॉम
4. श्री रामदास गौड़ा, आलेख- भारतीय परम्परा और साहित्य का महत्त्व, अखण्ड़ ज्योति, वर्ष 1958, वर्जन-2

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

5. आलेख-भारतीय ज्ञान परम्परा में विश्व शांति का सामर्थ्य, ब्लॉग- अल्हड, शुक्रवार 19 अक्टुबर, 2018
6. पूर्वोक्त
7. तुलसीदास- रामचरिमानस
8. डॉ. आनंद पाटील, आलेख- भारतीय ज्ञान परम्परा, जनहित राष्ट्रहित की सिद्धि, सबलोग, फरवरी, 29, 2020

***

The Asian Thinker